ISSN-2230-7540

# हरियाणा व राजस्थान की संस्कृति का आधुनिकीकरण – वर्तमान सन्दर्भ में

**Dr. Kulwant Singh**

Hindi Department, M.M.P.G. College Fatehabaad

**‘संस्कृति’** से तात्पर्य हैं, वे सब सामाजिक बातें, जिनके द्वारा मानव–जीवन तथा व्यक्तित्व को मापा जा सकता हैं। इसमें चिंतन तथा कलात्मक सृजन की वे क्रियाएं भी सम्मिलित हैं, जो मानव व्यक्तित्व व जीवन के लिए साक्षात् उपयोगी न होते हुए भी उसे समृद्व बनाने वाली हैं अर्थात् शास्त्र, द”ान आदि में होने वाले चिंतन, साहित्य, चित्रांकन एवं परहित साधन आदि नैतिक आद”ा ही संस्कृति हैं। आधुनिकीकरण की छाप आज हरियाणा व राजस्थान की संस्कृति खान–पान व फै”ान की दुनिया में ज्यादा दिखाई पड़ती है। हरियाणा प्रदे”ा की भांति राजस्थान के मनचले युवा पैन्ट–”ार्ट, सिर पर टोपी व फिल्मी स्टाईल के कै”ा रखना बदलती फै”ान–परस्ती का अनुपम उदाहरण है। भाषा की दृष्टि से इन प्रदे”ाों की संस्कृति में परिवर्तन की धारा प्रवाहमान है। आज वर्तमान समय में लोगों की अपनी बोलियों का प्रभाव धीरे–धीरे समाप्त हो रहा है। नगरीकरण के प्रभाव के फलस्वरूप लोगों का रूझान शहरों की ओर ज्यादा हो रहा है। इसलिए शहरीकरण के कारण व्यक्ति अपनी लोकभाषा को तिजांजलि दे रहा है। इसलिए अपनी क्षेत्रीय बोली का प्रभाव अधिक समय तक स्थिर नहीं रख सकता। खान–पान के पहनावे की इस होड़ ने भी वर्तमान संस्कृति का आधुनिकीकरण करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। आम आदमी अच्छा खाना पसंद करता है। हरियाणावासी दिल्ली क्षेत्र के नजदीक होने के कारण उनकी संस्कृति में एक नया आयाम स्थापित हो रहा है। राजस्थान प्रदे”ा के युवा व्यक्ति बाजरे की रोटी व सरसों का साग का स्वाद भूल चुके हैं। आज की आधुनिकीकरण संस्कृति व प”िचम–सभ्यता की चपेट में आ जाना स्वभाविक है। आधुनिकीकरण जीवन के इस दौर में होटली–जीवन ने उनको काफी प्रभावित किया है। लोगों की नीयत सादे भोजन में न रहकर शहरी खाने पर टिकी हुई है ।

ISSN-2230-7540

धार्मिक दृष्टि से इन प्रदे”ाों के पुरूष का वि”वास आज भी यथावत है। देवी–देवताओं की पूजा करना, भोलेनाथ के कावड़ चढ़ाना, जागरण लगवाना, फेरी लगाना, ओट लेना जैसी धार्मिक आस्थाओं के ये लोग धनी है। आज के अधिकां”ा युवा लोग एक नया धर्म 'सच्चा–सौदा' का सहारा लेना चाहते हैं। परमानंद की प्राप्ति के लिए ये लोग अपना सर्वस्व अर्पण कर देना चाहते हैं। यह नया पंथ हरियाणा, राजस्थान, उतर प्रदे”ा, दिल्ली, पंजाब व बिहार के क्षेत्र में अपनी पकड़ मजबूत बना चुके है।

धर्म प्रकृति द्वारा प्रदत ये कभी न समाप्त होने वाला यह अध्याय है, जो जीवन के साथ जुड़ चुका है। आधुनिकीकरण की सच्ची छाप इस तत्व में स्पष्ट अंकित है। वर्तमान युग में भौतिकवादी दौर में लोगों का धर्म के प्रति डगमगाता वि”वास, सच्ची सहानुभूति की आस्था हिलोरे ले रही है। हरियाणा व राजस्थान प्रदे”ाों में बि”नोई संप्रदाय अपने उन्नतीस नियमों का पालन नहीं कर रहा है । इसी तरह हर व्यक्ति इन प्रदे”ाों में व्यवसायिक दृष्टि से धर्म के प्रति सजग नहीं है। नाई का काम हर जाति–बिरादरी के लोग करने लगे हैं। बढ़ई का काम जातिगत न होकर हर व्यक्ति इसे बखूबी कर रहा है। इसी तरह राजमिस्त्री का काम सभी व्यक्ति जानते हैं। यह आज की आधुनिक संस्कृति का प्रभाव है।

आज 'संस्कृति' शब्द का आधुनिकीकरण इस अर्थ में भी हो रहा है कि समाज में वि”ोषकर हरियाणा में आचरण–व्यवहार में काफी बदलाव देखने में आया है। हरियाणा व राजस्थान के पुरूष बड़े विवके”ाील, शांत स्वभाव के, विन्रम ह्रदय के माने जाते हैं। आदर–सत्कार व नैतिक–मूल्यों को निभाना ये लोग बखूबी जानते हैं। लेकिन बदलती संस्कृति का प्रभाव इन पर स्पष्ट देखा जा सकता है। बड़े के प्रति सम्मान की भावना दिखलाने के तरीके में बहुत परिवर्तन आया है। युवा वर्ग किसी सगे संबंधी को विदाई देते समय राम–राम की बजाय टा–टा या बॉय–बॉय कहने में ज्यादा वि”वास रखता है। इन अंग्रेजी के शब्दों के प्रयोग के कारण वर्तमान संस्कृति के स्वरूप में बहुत बदलाव देखने को मिलता हैं।

''राजपूताने और सिंध के बीच के प्रदे”ा का पुराना नाम 'मेवात' है। मध्यकाल में अलवर, भरतपुर, गुड़गॉव, आगरा व मथुरा जिले का वह भाग जो भरतपुर और गुड़गॉव की सीमा से लगता था, मेवात प्रदे”ा के रूप में जाना जाता था। यह क्षेत्र चारों ओर से पहाड़ियों से घिरा होने के कारण सामरिक दृ"ट से अत्यंत महत्वपूर्ण था । आजादी के बाद इसके तीन हिस्से कर दिए, इसका अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है, लेकिन अपनी संस्कृति, रहन–सहन, रीति–रिवाज और बोली आदि के स्तर पर आज भी यह संस्कृति का नया आयाम स्थापित कर रहा है।'' इन प्रदे”ाों में आज दीपावली का पर्व बड़ी धूमधाम के साथ मानाया जाता है । दीपावली के पर्व पर दीपों का खास महत्व है। आज लोगों का दीपों के प्रति वि”वास न रहकर बिजली से जलने वाले बल्ब की लड़ियों के प्रति ज्यादा हो गया है। वर्तमान संस्कृति का आधुनिकीकरण तो इस अर्थ में सबसे अधिक है कि लोग मूर्तियों के सामने इलेक्ट्रॉनिक धूप और दीप जलाते हैं। प्रदूषण–मुक्ति की दि”ाा में यह सकारात्मक कदम हो सकता है, लेकिन संस्कृति का स्परूप इससे बिल्कुल बदल गया है ।

''राजस्थान व हरियाणा प्रदे”ाों में देवी–देवीताओं के प्रति प्रगाढ़ आस्था है। जगह–जगह मेलों का आयोजन और उनमें लोगो की भीड़ देखते ही बनती है। लेकिन आज ज्यादातर व्यक्ति अपनी मन्नतें पूरी होने पर पैदल चलना नहीं चाहते ।

ISSN-2230-7540

बसें, कारें, मोटरों के द्वारा जाकर वह मात्र औपचारिकताएं पूरी करता है। यह आधुनिक संस्कृति का प्रभाव है।' [1]

कला के क्षेत्र में राजस्थान व हरियाणा प्रदे"ा के व्यक्ति उभरकर सामने आए हैं। मिट्टी के बर्तन बनाना आज भी इन प्रदे"ाों की संस्कृति का परिचायक है। "मिट्ठी के बर्तन बनाना कुम्हार जाति का व्यवसाय है। इसलिए कम दामों पर ये बर्तन न मिलकर ऊंची दरों पर बेचे जाते हैं। यह बर्तन की कला आधुनिकीकरण की दौड़ में शामिल हो गई है। हाथ से घुमाए जाने वाले चाक व उनकी कला प्रद"ान में काफी बदलाव देखने में आया है। लेकिन मिट्टी के बर्तन के प्रति लोगों का ध्यान न होकर पानी की टंकी, सिल्वर व स्टील के घड़ों का प्रयोग आज की संस्कृति के पहलू है। इन प्रदे"ाों में पुरूषों की तरह महिला वर्ग में भी परिवर्तन देखने को मिलता है। आज इन प्रदे"ाों की महिला बिजली की चक्की का आटा अधिक पसंद करती है। घरों में लगे हैडपम्प नल व मोटरों ने पानी भरकर लाने की समस्या खत्म कर दी है। शहरी स्त्रियों की भांति वह भी आराम करना अधिक पसंद करती है। यह संस्कृति की बदलती स्थिति है। [2]

हरियाणा व राजस्थान में आज सुबह–सुबह घरों में रेडियो या टेपरीकार्डर की सहायता से भजन गाए जाते हैं, जो कि फिल्मी धुनों पर तैयार किए हुए होते हैं। सुर–कबीर व मीरा के भजन की जगह ये फिल्मी धुनों के गीत आ गए हैं। यह संस्कृति की मात्र औपचारिकता है। कुल मिलाकर आज आधुनिकता का ऐसा रंग चढ़ गया है कि सामान्य–व्यवहार के अलावा धर्म–द"ान और सांस्कृतिक प्रतीकों के लिए अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग होने लगा है पर ये सारे साधन बंद नहीं होंगे। भक्ति भाव गायिका की मुस्कान के अंदर डूबते जाएंगे और मुस्कान के साथ भजन तैयार करने वाला मीडिया सबको मूर्ख बनाकर अपना हित साधता रहेगा। आज संस्कृति का यह पहलू इन लोगों की विव"ाता का दयोतक नहीं है बल्कि शौक से सुनना–देखना इनकी आदत बन चुकी है। 'हरि के नाम को श्रृंगार की चासनी में डूबोकर लीजिये या सीधे–सीधे 'मेरे तो गिरधर गोपाल' कहिये, क्या फर्क पड़ता है।'

वर्तमान संस्कृति की आधुनिकीकरण की प्रकिया इन प्रदे"ाों में इतनी तेज है कि अधिकां"ा लोग अपनी सभ्यता व संस्कृति के कटकर शहर के पि"चम–मूल्यों को अपनाने में ही गौरव समझते है। अपने जीवन–स्तर में सुधार के साथ–साथ लोक–संस्कृति के प्रति उनकी उदासीनता भी स्पष्ट दिखलाई पड़ती है।

## लोक–संस्कृति का आधुनिकीकरण

लोक–संस्कृति में लोक साहित्य की विभिन्न विधाओं लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनाट्य, लोकोक्ति, मुहावरों, पहलियों को शामिल किया जाता है। आधुनिक लोकगीतों में नए–नए प्रतिमान, नई–नई रागनियां, अ"लील चलचित्र, सिनेमाघरों में फिल्मों का प्रद"ान व सांगों का आधुनिकीकरण आज की पि"चमी–सभ्यता का प्रभाव है।

आज अगर इन प्रदे"ाों की तुलना करें तो महिलाओं द्वारा गाए जाने वाले लोकगीतों की धुनें फिल्मी गीतों के ऊपर आधारित है। जगह–जगह आर्कस्ट्रा के बोलबाले ले लोक संस्कृति का आधुनिकीकरण ही नहीं किया, बल्कि इसको बिकाऊ बना दिया है। हरियाणा व राजस्थान की लोक संस्कृति इनती फली–फूली है कि साधारण जन में इसकी धारा प्रवाहमान

है। इसी तरह राजस्थान में अनेक जातियां विधमान हैं जिनका प्रमुख गाना–बजाना व धन कमाना है। इससे लोगों का मनोरंजन किया जाता है। 'नि"चय ही पिछले दिनों की आर्थिक–प्रगति, औद्योगिक विकास और जनवाद की स्थापना के कारण ये गाने वाली जातियां, अपने सच्चे स्वरूप को खो चुकी हैं।' लेकिन गांवों में उनका आज भी मुख्य स्थान है क्योंकि वहां सामन्ती संस्कारों को अभी पूरी पराजय नहीं मिली है। सिनेमा के प्रभाव से, इन जातियों ने, अपने पु"तैनी गीतों को छोड़ दिया हैं। हरियाणवी लोकगीतों में फिल्मी धुन से प्रभावित लोकगीत की कुछ पंक्तियां दृष्टव्य है–

''मेरे गले की नेकलिस जुलम करे,

हां, किसी छैला की नजर पड़े,

वो बिन मारे मर जाए।

मेरा काला चोटीला रे"ाम का।'' [3]

हरियाणवी व राजस्थानी लोकगीत, लोक संस्कृति के मुंह बोलते चित्र कहे जाते हैं। इनमें लोकजीवन की सभी रीति–नीतियों का सही आंकलन अपने सहज रूप में सुरक्षित रहता है। आज वर्तमान युग में अबला कही जाने वाली नारी सबला हो उठी है। राजनीतिक ऊहापोह में सामाजिक मर्यादाएं सिमट कर रह गई है। ऐ"वर्य एवं सता के लालच में हम अपने आत्म–गौरव को भूल बैठे हैं। भौतिकता की आड़ में दिन–दहाड़े दीन–ईमान की खरीद–फरोख्त होने लगी है। ये सब बातें आज इन प्रदे"ाों के लोक गीतों में संजोकर लोक जीवन में खूब गाई–सुनाई जाती है।

हरियाणा व राजस्थान प्रदे"ाों में स्कूल, कॉलेजों की बहुलता देखी जा सकती है। अधिक से अधिक लड़कियां कॉलेज की पढ़ाई का रंग–ढंग देखना चाहती है। हरियाणवी लोकगीत की कुछ पंक्तियों में इसकी झलक देखने योग्य है–

''नया जमाना नयी रो"ानी पाणी कैसी झाल पड़ी

सारी छोहरी कोलिज मैं तै दे पेर पर–चाल पड़ी

कोए तो काली कोए तो भूरी कोय तो बैरण लाल पड़ी

सारी छोहरी ........................................................................ ।'' [4]

मनुष्य चाहे जिनता भी सभ्य हो जाए । वह चाहे जितना आधुनिक और उतर आधुनिक हो ले, लोकतत्व उसे हमे"ाा संयमित रखते हैं। लोक तत्वों के प्रवाह ने मनुष्य को हमे"ाा नई ऊर्जा, नई शक्ति, सामर्थ्यवान और जीवंत बनाए रखा है। लोकतत्व समय और स्थिति के अनुसार रूढ़ियों का भंजन भी करते हैं। आज फड़ के लिए व्याख्यानों व प्रद"ानों का आयोजन भारत के अलावा विदे"ाों में भी हो रहे हैं। आज राजस्थान प्रदे"ा में 'फड़' विधा में आधुनिकीकरण के कारण इसके वाद्य–यंत्रों व सुर को फिल्मी संगीत में पिरो दिया है। 'फड़' ने हमारे लोकगीतों को बचाने में अहम योगदान दिया है

ISSN-2230-7540

अन्यथा ये कभी के समाप्त हो जाते ।

''लोकवाद्यों में नगाड़े, हरमोनियम, ढोलक तथा मंजीरों का हरियाणवी व राजस्थानी लोक–संगीत में प्रयोग होता है। आज आधुनिकीकरण की प्रक्रिया इनती तेज है कि विभिन्न लोकवाद्यों में बिजली–चलित यंत्रों ने सुर व लय की धारा को एक नया आयाम दिया है। आज युग की मांग के अनुसार बहुत से लोग मजाकिया पात्रों के मजे लूटने के लिए लोक ख्यालों में शामिल होते हैं। जहां भी ये खेल आयोजित होते हैं जनता पात्रों के विभिन्न आधुंनिक परिधानों के सहारे इनका प्रचलन वर्तमान समय की आधुनिकीकरण की छाप है।'' [5]

लोककथा का स्परूप राजस्थान व हरियाणा प्रदे"ा में आज भी स्थाई रूप से विद्यमान है। इनकी कला प्रद"ानी से विभिन्न प्रदे"ा प्रभावित हैं। इन भागों के विविध जीवन–पक्षों में राजस्थानी लोक कलाओं के प्रभाव का दिग्द"ान होता है। राजस्थान व हरियाणा में लोक संस्कृति का निर्माण पक्ष इन गीतों, नाट्यों तथा गाथाओं में आज भी जीता जागता सुरक्षित है।

''आज वर्तमान युग में हरियाणा व राजस्थान प्रदे"ा में ही लोक संस्कृति का आधुनिकीकरण नहीं हुआ बल्कि समूचा वि"व इसकी चपेट में है। शहरों में तो गांवों की अपेक्षा स्थिति बदतर हुई है। राजस्थान प्रदे"ा में राजा महाराजाओं के समय जयपुर, झालावाड़, बीकानेर, अलवर आदि रियासतों की अपनी मण्डलियां थी जो उनके मनोंरंजन के लिए प्रद"ान करती भी। इन मण्डलियों में प्रवीण कलाकार नृत्य और संगीतकार का काम करते थे । आज नाट्य कला को प्रोत्साहन अव"य मिला है, परंतु आधुनिकीकरण का रंग इन पर भी खूब जमा है। पिछले कुछ वर्षो में शौकिया रंगमंच में एक वि"ोष प्रकार का परिवर्तन आया है, उस पर अब केवल नाटकों का ही वि"ोष स्थान नहीं है। नृत्य गीत, वेष–विन्यास, एकांकी नाटक, रेडियो नाटक, साज संगीत आदि को वि"ोष महत्व मिला है। इन कार्यक्रमों में लोकनृत्य, लोकगीत भी एक प्रकार के शौक बन गए हैं। इनमें फिल्मी गीत नृत्यों की बहार भी रहती है। शास्त्रीय तथा वि"ाुद्व लोक शैली के नाटक, गीत नृत्यआदि की ओर वि"ोष अभिरूचि उनमें नजर नहीं आती। फिल्मों के इस युग में इन प्रदे"ाों में व्यावसायिक प्रद"ान मण्डलियां लगभग समाप्त हो गई है। लेकिन फिर भी कई गांवों में इस तहर की रास मण्डलियों के द"ान होते हैं, जो आज की आधुनिक युग की छाप से परे नहीं है।'' [6]

आधुनिकीकरण का स्पष्ट प्रभाव इन प्रदे"ाों के लोकनाट्यों पर स्पष्ट देखा जा सकता है। सिनेमा में आजकर अधिकाधिक लोकगीतों एवं लोकोत्सवों का समावे"ा किया जा रहा है। ''लोकनाट्य के प्रत्येक प्रद"ान में कुछ न कूछ परिवर्तन अव"य आ जाता है। इसका प्रवाह गंगा की तरह पवित्र एवं निर्मल है।'' इन गीतों में आडम्बरहीन सरस लोक संस्कृति का अक्षुण्ण आकार सुरक्षित है।'' **डॉ0 कृष्णचंद्र "ार्मा** का कथन इस तथ्य को उजागर करता है कि लोक संस्कृति के अंतर्गत जन–साधारण के जीवन में लोकनाट्य का नि"चत स्थान है, चाहे फिर औद्योगीकरण के फलस्वरूप फिल्म आदि के प्रभाव के कारण इन मण्डलियों की अवस्था कितनी ही जर्जर और साधनहीन क्यों न हो जाती हो। ''निसंदेह आज के शहरी रंगकर्मी को लोकनाट्य की उस लोकप्रियता के मूल कारणों पर विचार करना आव"यक जान पड़ता है, ताकि वह भी अपने कला प्रयत्नों में उन तत्वों का समावे"ा कर सके, जो किसी कला को अपने उदिष्ट जन–समुदाय के साथ, अपने प्रेक्षक–वर्ग

ISSN-2230-7540

के साथ इस प्रकार सम्बद्व है।''[7]

आधुनिकीकरण की आड़ में सिनेमा की तर्जे आज लोक नाट्यों पर अपना प्रभाव छोड़ रही है। इनकी रागनियों पर फिल्मी रंग चढ़ता जाता है।

आज लोक संस्कृति आधुनिकीकरण की परिपाटी के रूप मे निखर रही है। आज गांव व शहर में गणतंत्र दिवस हो या स्वतंत्रता दिवस हर अवसर पर भजनों, रागनियों की जगह फिल्मी तर्ज पर गीत, अ"लील रागनियों व तड़क–भड़क वाले लोकगीतों की बहार रहती है। विगत् वर्षों में इन भावुक–भजनों का चाव था लोग ध्यान से सुनते थे। लेकिन आज के इस युग में हर चीज आधुनिकीकरण के f"ाकेजे में जकड़ी हुई प्रतीत होती है।

''कठपुतली लोकनृत्य राजस्थान व हरियाणा की लोक–संस्कृति का अविच्छिन्न अंग रहा है। लोक में ही इसका प्रचार–प्रसार हुआ है। धीरे–धीरे इसमें सुधार होते गए और इसका प्रसार नगरों में भी हुआ। राजस्थानी कठपुतलियों का विषय सामंती जीवन की अभिव्यक्ति थी, पर आगे चलकर आधुनिक विषयों की भी इनके माध्यम से अभिव्यक्ति होने लगी है। सरकारी योजनाओं के प्रचार में भी इस प्रकार के नृत्य प्रस्तुत किए जाते हैं और यह कला जन–संचार के रूप में सामने आई है।'' [8]

उतर–आधुनिकता के बढ़ते दबावों से लोक–संस्कृति पर उत्पन्न खतरों की चर्चा करते हुए **डॉ.0 दुबे** इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि– ''हमारी जातिया चेतना के साथ अतिसूक्षम धरातलों पर अब लोक संस्कृति के प्रति हमारा दायित्व है – एक और लोक संस्कृति का सही उपयोग और दूसरी और उसकी सुरक्षा। हालांकि इन दोनों के प्रति सतर्क और सावधान रहकर ही हम लोक संस्कृति को आधुनिक जीवन–मूल्यों के संदर्भ में परख सकते हैं और उसे उपयोगी बना सकते हैं।''[9]

हरियाणा व राजस्थान का लोक साहित्य का संचार जन–जन में विद्यमान है। समाज का कोई भी पहलू इनसे अछूता नहीं है। लोक साहित्य को बचाने और संरक्षित रखने की जिम्मेदारी मनुष्य पर है। औद्योगिकीकरण, आधुनिकीकरण, बाजार की शक्तियां और भूमण्डलीकरण अपना प्रभाव छोड़ रहे हैं, लेकिन होना यह चाहिए कि ये लोक–रंग अपनी पहचान बनाए रखे और सदा–सदा के लिए इनकी अस्मिता बनी रहे।

## सन्दर्भ ग्रंथ सूची


1 हिन्दी और गुजराती नाट्य साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ रणबीर उपाध्यय, पृ0 59.

2 हरियाणा प्रदे"ा के लोकगीतों का सामाजिक पक्ष, भोलानाथ शर्मा व जगदी"ा नारायण, पृ0 17.

3 हरियाणा के लोकगीत, डॉ0 साधुराम शारदा, पृ0 22

4 वही पृ0 192.

ISSN-2230-7540

5 हरियाणा लोकनाट्य परम्परा, डॉ0 पूर्णचन्द शर्मा, पृ0 27.

6 'हरियाणा सवांद' पत्रिका अंक 1987 मई, डॉ0 सरला मलिक हरियाणा के लोकनृत्य'

7 श्री कृष्णचन्द्र शर्माः सूर्यकवि, प0 लक्ष्मीचंद, पृ0 81

8 हरियाणा की कृषि सम्बंधी लोकोक्तियां, विद्या सिवाय, पृ0 7

9 हरियाणा साहित्य और लोक संस्कृति, डॉ0 पूर्णचन्द शर्मा पृ0 5

IGNITED MINDS Journals